30–5–67 ओमशांति रात्रीक्लास

नये2 बच्चों से भी मिलन होता जा रहा है। दिन प्रतिदिन फैमिली बड़ी होती जा रही है। फैमिली में होते ही हैं मां–बाप ,भाई–बहन। बच्चों की बुद्धि में अब बैठा है कि कल्प पहले जब बाबा आया था तब भी ऐसे ही यह फैमिली इकट्ठी हुई थी। हर कल्प बाप से मिलते हैं और पुरुषार्थ कर बाप से वर्सा लेते हैं। सिर्फ बाप को याद करना है। ज्ञान की प्वाइंट्स धारण करना तो बहुत ही सहज है। ऐसे नहीं कि कोई बहुत बड़ा सबक दिया जाता है। मनुष्य तो सारी रामायण, गीता आदि कण्ठ कर लेते हैं। यहां तुमको क्या धारण करना है?अल्फ अल्फ और बे बस। यह भी जानते हो कि जो2 दिन बीतता है वो ड्रामा में नूंध है। सारा चक्र बुद्धि में है। बच्चों को थोड़ी तकलीफ सिर्फ होती है तो बाप को याद करने (में)। बाप मिला ,निश्चय हुआ। बाप ने समझाया है कि बच्चों तुम तमोप्रधान बन गये हो। अब सतोप्रधान बनने लिए सिर्फ बाप को याद करना जरूरी है। इसलिए ही गाया जाता है तुम्हरी गत–मत न्यारी। यह मत कोई के पास होती ही नहीं है। सिर्फ याद करो ,पवित्र बनो और बस अब अपने घर चलो। नालेज पूरी हुई। सो भी बच्चे जानते हैं कि हर 5000वर्ष बाद बाप से वर्सा लेते हैं। इतनी अच्छी बातें भला भूलनी क्यों चाहिए?धारणा भी कोई करना लम्बी–चौड़ी नहीं है। सिर्फ 84का चक्र याद करना है और वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी बुद्धि में घुमानी है। बाप को याद करना है और 84के चक्र को याद करना है। कितना सहज है। भक्तिमार्ग में कितने लम्बे–चौड़े मंत्र मिलते हैं। बाप तो कोई मंत्र भी नहीं देते हैं। सिर्फ बाप को याद करना है। जिससे ही हर कल्प वर्सा मिलता है। उतरती कला में 84जन्म लेते हैं। फिर चढ़ती कला में देरी नहीं लगती है। बाप आकर सबको वापस ले जाते हैं। बुलाते भी हैं कि बाबा आकर पावन दुनियां में ले चलो। बाप भी जानते हैं कि हमको आकर सभी बच्चों को वापस ले जाना है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। कल तुमको बादशाही देकर गये थे अब फिर देने आये हैं। जो बीते उनका फिर कोई चिंतन नहीं करना है। ड्रामा पास हुआ फिर खलास। ऐसे नहीं कि ऐसा होता था तो. .....बीती सो बीती। चिंतन नहीं करना होता है। ड्रामा की पट्टी पर चलना है। पास्ट का चिंतन नहीं करना है। बच्चों को मालूम है कि विनाश होना है। इस छी2 दुनियां में क्या रखा है?तुमको कितनी समझ है। बाप पढ़ाते हैं। बाप को कहा जाता है श्री2 श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाबा श्रेष्ठ बनाने वाले हैं। सभी बच्चे बनेंगे जरूर। फिर जो जितना पुरुषार्थ करते हैं उतना ही बनते हैं। बच्चों को पुरुषार्थ करना है कि हमारी राजधानी स्थापन हो जावे। हाथ में कोई हथियार आदि कुछ भी नहीं है। तुम्हारी है ही गुप्त सेना। कितनी प्रदर्शनियां तुम करते हो , समझाते हो फिर भी समझते थोड़े ही हैं। बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। परमपिता परमात्मा ने तो जरूर नई दुनियां ही रची होगी। आज से 5000वर्ष पहले इन देवताओं की राजधानी थी। शिवबाबा कहते हैं कि सारा दिन बाबा3 कहते रहो। बाबा कहते हैं कि मुझे याद करो और बादशाही लो। और कोई तकलीफ नहीं है। सबको यही पैगाम देना है कि बाबा कहते हैं कि मुझे याद करो तो विष्णुपुरी का मालिक बन जावेंगे। एक ही बाप मैसेज देते आये हैं कि मुझे याद करो। मैं भी इस शरीर का आधार लेकर तुमको कहता हूँ। फिर इसमें मूंझने की बात ही नहीं है। जानते हो कि कल्प2 ऐसे बाप से वर्सा लेते हैं। बाबा आया हुआ है। अब नई राजधानी स्थापन हो रही है। समझाते हैं ना कौन सा बाप बात करते हैं?रूहानी बाप। सब आत्मायें सुनती हैं। बाप कहते हैं कि यह सब भूलते क्यों हो?बहुत सहज बातें हैं समझने की। कोई तकलीफ तो है नहीं। जितना पुरुषार्थ कल्प पहले किया होगा वो दिखाई पड़ता है। स्कूल में पता पड़ता है ना। अपने अंदर में देखना है। बुरा कैरेक्टर है तो उसको अच्छा करते जाओ। अच्छे2 दैवी गुण धारण करने हैं। फिर वहां पर जाकर राजाई करेंगे। कैसे सोने,हीरों के महल बनावेंगे। अनगिनत धान (धान्य/अनाज) होता है। तुमको तो नशा रहना चाहिए कि अनेक बार बाप से राजाई ली है। इसके लिए ही कहा जाता है कि अतिन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। अच्छा, बच्चों से अब गुडनाइट।